Padma Shri



Dr. Gyan Chaturvedi

Dr. Gyan Chaturvedi is a rare combination of professional doctor and a professional writer of national repute. Presently, he is practicing in General Medicine and Cardiology along with the teacher and guide for 'Diplomate National Board', New Delhi.

2. Born on August 2, 1952 , Dr. Chaturvedi completed his M.B.B.S. and M.D. (General -Medicine) from S.S. Medical College, Rewa. He enjoyed the reputation as the most popular physician and the Head of the Department (Medicine) for around 33 Year and finally reached to the Chief medical services from BHEL Bhopal. He has been trained specially in Cardiology besides being an internist of repute.

3. Dr. Chaturvedi is widely recognized as the most intelligent satirist in Hindi belt after the generation of Late Sharad Joshi, Shrilal Shukla and Harishankar Parsai, whose style of writing in which he uses profound sarcasm, dialect, irony, wit, and most importantly, satire, forms his writing to fit the style of himself as an outstanding writer. He uses various literary techniques, traditions and the most importantly his humorous satire to mock and ridicule common issues of politics, religion, and society. Dr. Chaturvedi s satirical methods are evident in most of his columns and novels. This took his writing to an international acclaim as an honour from South East Asian Writer's Forum, London.

4. Dr. Chaturvedi is a lone writer in sphere of satire after Harishankar Parsai who appears as a social commentator. His novels on the level of artistry could easily be compared with Spanish writer Milan Kundera since his idiom and angle of vision have a potential of great literary tradition of eternal values. He is a lone Indian writer who has been writing regular column for ten years in journals and magazines of national repute like 'India Today', 'Shukravar', 'Rajasthan Patrika', 'Gyanoday', Tehlka' and 'Lokmat Times'. He has authored four novels with outstanding skill and wider social concern. The classic work entitled 'Narak Yatra' is work which could be equated with the Solzhenitsyn's 'Cancer Ward'. He depicts the bare reality of Indian hospitals associated with Medical Teaching Institute. His status of a medical scholar contributed a lot to his creative writing.

5. Dr. Gyan's creativity has brought several awards from various literary forums and Govt. of India in addition to the Department of Culture, Madhya Pradesh and Uttar Pradesh. In the year 1994, he received Kriti-Samman from Govt. of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh both. Delhi Sahitya Akademi and the Department of Culture, Madhya Pradesh have conferred their National Awards for his satire writing respectively in the years 1994 and 2009. In the year, 2015 he bagged the most prestigious awards titled 'Shatabdi-Samman' from Madhya Bharat Hindi Sahitya Samiti and Yash-Bharti-Samman from Govt. of Uttar Pradesh.



डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी, एक पेशेवर डॉक्टर और राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त एक पेशेवर लेखक के विरल संयोजन हैं। वर्तमान में आप सामान्य चिकित्सा विज्ञान एवं हृदयरोग विज्ञान के साथ-साथ 'डिप्लोमेट नेशनल बोर्ड, नई दिल्ली के लिए अध्यापन और मार्गदर्शन का व्यवसाय कर रहे हैं।

2. आपका जन्म अगस्त 2, 1952 को हुआ था। आपने अपनी एम बी बी एस तथा एम डी (सामान्य चिकित्सा विज्ञान) की पढ़ाई एस एस मेडिकल कॉलेज, रीवा से पूरी की। आपने लगभग 33 वर्षों तक सर्वाधिक लोकप्रिय चिकित्सक और मेडिसिन के विभागाध्यक्ष के रूप में प्रसिद्धि अर्जित की और अन्त में भारत हेवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड, भोपाल से लेकर चिकित्सा सेवाओं के प्रमुख तक का सफर तय किया। एक ख्यातिप्राप्त इंटर्निस्ट होने के बावजूद आपने विशेष रूप से हृदयरोग विज्ञान में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

3. आपको व्यापक रूप से स्व. शरद जोशी, श्रीलाल शुक्ल तथा हरिशंकर परसाई की पीढ़ी के बाद हिन्दी भाषी क्षेत्र के सबसे मेधावी व्यंग्यकार के रूप में जाना जाता है। आपकी लेखन शैली, जिसमें आप कटाक्ष, द्वन्द्व, व्यंग्योक्ति, वाग्विदग्धता और विशेष रूप से व्यंग्य का ऐसा गूढ़ प्रयोग करते हैं, से एक ऐसे लेखन की छवि उभरती है, जो आपकी अपनी शैली के एक विशिष्ट लेखक के रूप में सटीक बैठती है। आप विभिन्न साहित्यिक तकनीकों, परंपराओं का प्रयोग करते हैं और विशेष रूप से राजनीति, धर्म तथा समाज के साधारण मुद्दों की नकल करने और उन्हें हास्यास्पद बनाने के लिए अपने विनोदी व्यंग्य का प्रयोग करते हैं। आपकी व्यंग्यात्मक विधाएं आपके अधिकांश स्तम्भों और उपन्यासों में अपनी स्पष्ट छाप छोड़ती हैं। इस विधा ने आपके लेखन को साउथ ईस्ट एशियन राइटर्स फोरम, लंदन से प्राप्त सम्मान के रूप में एक अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई।

4. व्यंग्य की दुनिया में हरिशंकर परसाई के बाद आप अकेले ऐसे लेखक हैं, जो समाज के एक टीकाकार के रूप में दिखाई देते हैं। कला-कौशल के स्तर पर आपके उपन्यासों की तुलना आसानी से स्पेन के लेखक मिलन कुन्दरा से की जा सकती है, क्योंकि आपके मुहावरों और दृष्टिकोण में शाश्वत मूल्यों की महान साहित्यिक परंपरा की क्षमता है। आप अकेले ऐसे लेखक हैं जो पिछले 10 वर्षों से राष्ट्रीय ख्याति की अनेक पत्रिकाओं और जर्नलों जैसे कि 'इंडिया टुडे'; 'शुक्रवार'; 'राजस्थान पत्रिका'; 'ज्ञानोदय'; 'तहलका'; और 'लोकमत टाइम्स' में नियमित स्तम्भ लिखते आ रहे हैं। आपने उत्कृष्ट कौशल और व्यापक सामाजिक सरोकार के साथ चार उन्यासों का लेखन किया है, 'नरक यात्रा' शीर्षक के रूप में आपकी उत्कृष्ट कृति, ऐसी रचना है जिसकी तुलना सोल्झेलिसिन के 'कैंसर वार्ड' से की जा सकती है। आप चिकित्सा शिक्षण संस्थान से सम्बद्ध भारतीय अस्पतालों की खुली वास्तविकता का चित्रण करते हैं। चिकित्सा-विज्ञान की पदवी ने आपके सृजनात्मक लेखन में काफी योगदान किया है।

5. आपकी रचना धर्मिता ने आपको मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के संस्कृति विभाग के अलावा विभिन्न साहित्यिक मंचों और भारत-सरकार की ओर से कई पुरस्कारों के सम्मान योग्य बनाया। वर्ष 1994 में आपको मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश, दोनों सरकारों द्वारा 'कृति'-सम्मान से विभूषित किया गया। आपको वर्ष 1994 और वर्ष 2009 में क्रमश: दिल्ली साहित्य अकादमी और मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग ने आपके व्यंग्यात्मक लेखन के लिए अपने-अपने राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया। आपने वर्ष 2015 में मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति की ओर से 'शताब्दी-सम्मान' और उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से 'यश-भारती सम्मान' जैसे सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार अर्जित किए।